अक्षमताग्रस्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा

प्रो. बी.एल. जैन
विभागाध्यक्ष
जैन विश्व भारती विश्वविद्याालय
लाड़नूँ, राजस्थान

अशोक कुमार लखेरा
शोधार्थी
जैन विश्व भारती विश्वविद्याालय
लाड़नूँ, राजस्थान

प्रस्तावना –

सामान्य रूप से जो बच्चे औसत शारीरिक एवं मानसिक स्तर IQ 90–110 वाले होते हैं, उन्हें हम सामान्य बच्चे के रूप में जानते हैं। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों से किस प्रकार विशिष्ट होते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि सामान्य बच्चे सामान्य शारीरिक एवं मानसिक श्रम वाले कार्यों को करने में किसी बाधा का अनुभव नहीं करते हैं। कक्षा में अधिकांश बच्चों की भाँति वे शैक्षिक उपलब्धि में भी औसत होते हैं। इनके सीखने की गति भी औसत होती है। इसके विपरीत विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे इस प्रकार के कार्यों को करने में अपने को असहज एवं असमर्थ पाते हैं।

विशिष्टता के क्षत्रे सार्वभौमिक हैं। महान कवि सूरदास जन्मान्ध थे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन का भाषा विकास काफी देर से हुआ। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट स्वयं पोलियोग्रस्त थे। यह विशिष्टता, वंशानुगत, कभी–कभी वातावरणजन्य तथा कभी–कभी दोनों का संयाजेन होती है। यह सभी उदाहरण सिद्ध करते हैं कि विभिन्न नियोग्यताओं की पूर्ति सम्भव है तथा कोई भी अक्षम बच्चे को उचित शिक्षण एवं प्रशिक्षण के द्वारा सामान्य बच्चों की तरह स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। आज प्रायः विश्व के सभी देशों में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति दृष्टिकाण में आमूल–चूल परिवर्तन हुआ है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के सम्बन्ध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों नें अपने–अपने ढंग से व्याख्या की है, यथा–

1. **हीबर्ड (1996) के अनुसार**,– ''विशिष्ट बच्चों की श्रेणी में वे बच्चे आते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है या जिनमें मानसिक या शैक्षिक निष्पादन या सृजन अत्यन्त उच्चकोटि का होता है या जिनको व्यावहारिक, सांवेगिक एवं सामाजिक समस्याएँ घरे लेती हैं या वे विभिन्न शारीरिक अपंगताओं या निर्बलताओं से पीड़ित रहते हैं, जिनके कारण ही उनके लिए अलग से विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था करनी पड़ती है।''
2. **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार**, ''विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट पद किसी गुण या उन गुणों से युक्त व्यक्ति पर लागू होता है जिसके कारण वह व्यक्ति, साथियों का ध्यान अपनी ओर विशिष्ट रूप से आकर्षित करता है तथा इससे उसके व्यवहार की अनुक्रिया भी प्रभावित होती है।''
3. **क्रिक (1962) के अनुसार,** ''विशिष्ट बच्चे मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक गुणों में सामान्य बच्चों से भिन्न होते हैं। उनका भिन्नता कुछ ऐसी सीमा तक होती है कि उसे स्कूल के सामान्य कार्यों में विशिष्ट शिक्षा सेवाओं में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। ऐसे बच्चों के लिए कुछ अतिरिक्त अनुदेशन भी चाहिए, ऐसी दशा में उनका सामान्य बच्चों की अपेक्षा अधिक विकास हो सकता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओ के आधार पर हम कह सकते हैं कि, ''विशिष्ट बच्चे वह बच्चे है जो कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांवेगिक एवं व्यावहारिक विशेषताओं के कारण किसी सामान्य या औसत बच्चे से उस सीमा तक स्पष्ट रूप से विचलित या अलग होता है जहाँ कि उसे अपनी याग्यताओं, क्षमताओं एवं शक्तियों को समुचित रूप से विकसित करने के लिए परम्परागत शिक्षण–विधियों में परिमार्जन या विशिष्ट प्रकार के कायर्क्रमों की आवश्यकता होती है, उन्हें विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे कहा जाता है। इस श्रेणी में शारीरिक रूप से अक्षम, प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, मन्दबुद्धि, शैक्षिक रूप से श्रेष्ठ एवं पिछड़े बाल–अपराधी, असमायोजित, समस्याग्रस्त, सांवेगिक, अस्थिरतायुक्त आदि प्रकार के बच्चे सम्मिलित हैं । **हेवटे तथा फारेनेस के अनुसार**, 'विशिष्ट' ऐसा व्यक्ति है जिसकी शारीरिक, मानसिक, बुद्धि, इन्द्रियाँ, मांसपेशियों की क्षमताएँ अनोखी हो अर्थात सामान्यतया एसे गुण दुर्लभ हों, ऐसी अनोखी दुर्लभ क्षमताएँ उसकी प्रकृति तथा कार्यों के स्तर में भी हो सकती है।

विशिष्ट बच्चों की पहचान एवं प्रकार :–

समाज में बहुत प्रकार के व्यक्तित्व के लोग पाये जाते है। कुछ सामाजिक होते हैं। कुछ अन्तर्मुखी होती हैं तो कुछ असामाजिक होते हैं, इसी तरह से बच्चों में विभिन्न प्रकार की वैयक्तिक भिन्नताएँ पायी जाती हैं, कुछ प्रखर बुद्धि के होते हैं तो कुछ मन्दबुद्धि के होते हैं तो कुछ में कार्यों को सीखने की प्रवृत्ति नहीं पायी जाती है, जो बच्चे सामान्य बच्चों की तरह कार्यों को करने में सक्षम नहीं होते हैं। वे विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चे होते हैं। वह बच्चे सामान्य बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा से लाभान्वित नहीं हो सकता। उसे सामान्य बच्चों के साथ ही शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती हैं जिसके कारण उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है। अतः अध्यापक और समाज का यह नैतिक दायित्व है कि वह विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान सुनिश्चित कर उन्हें उनकी आवश्यकता एवं सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करें।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान या लक्षण

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे सामान्य बच्चों से विशिष्ट लक्षणों वाले होते हैं। सामान्य बच्चों में पाये जाने वाली निम्नलिखित विशिष्ट प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं– यह अन्तर्मुखी, निराशावादी, सांवेगिक, स्थिर, शर्मीले, निष्क्रिय, आत्मकेन्द्रित, चिन्ताग्रस्त, निर्भर प्रवृत्ति, कभी–कभी उग्र, एकाकी भावना वाले होते हैं। इनकी पहचान हम निम्नलिखित तरीके से कर सकते हैं –

1. **निरीक्षण द्वारा**–अध्यापक अपने कक्षा–कक्ष में शिक्षण के दारैान उपरोक्त लक्षणों के आधार पर विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को चिन्हित कर सकता है और उन्हें आवश्यकतानुसार शिक्षा प्रक्रिया से लाभान्वित कर सकता है।
2. **चिकित्सकीय परीक्षण द्वारा**– कभी–कभी ऐसा होता है कि विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान न होने के कारण विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के शरीर एवं मस्तिष्क का चिकित्सकीय परीक्षण कर उनकी पहचान की जा सकती हैं।
3. **मानसिक परीक्षण द्वारा**– छात्रों का मानसिक परीक्षण कर उनकी विशिष्टता का पता लगाया जा सकता है। यह थिमेटिक अपरसेप्सन टेस्ट (TAT) हरमन रोशा का स्याही धब्बा परीक्षण आदि जैसे परीक्षणों का प्रयोग कर पता लगाया जा सकता है।
4. **शैक्षिक परिणामों के द्वारा**–विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे के कक्षा के परीक्षा में प्राप्त परिणामों का अवलोकन एवं विश्लेषण के द्वारा इनकी विशिष्टता का पता लगाया जा सकता है।
5. **व्यवहार के अवलोकन के द्वारा**– विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों द्वारा किये गये व्यवहारों के मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं विश्लेषण से उनकी विशिष्टताओं का पता लगाया जा सकता है।
6. **समाजमिति एव ं साक्षात्कार के द्वारा**– विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान के लिए समाजमिति एवं उनका प्रत्यक्ष विधि से साक्षात्कार कर उनकी विशिष्टताओं का पता लगाया जा सकता है।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के प्रकार

सामान्य बच्चों से भिन्नता रखने वाले विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे आपस में भी अनेक असमानताएँ रखते हैं। कुछ बच्चे सीखने की निर्योग्यताओं के कारण, कुछ बौद्धिक क्षमताओं के कारण तथा कुछ असामान्य शैक्षिक उपलब्धि के कारण विशिष्ट आवश्यकता वाले होते है। सामान्यतः हमें विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे को निम्नलिखित प्रकार से विभक्त कर सकते हैं :–

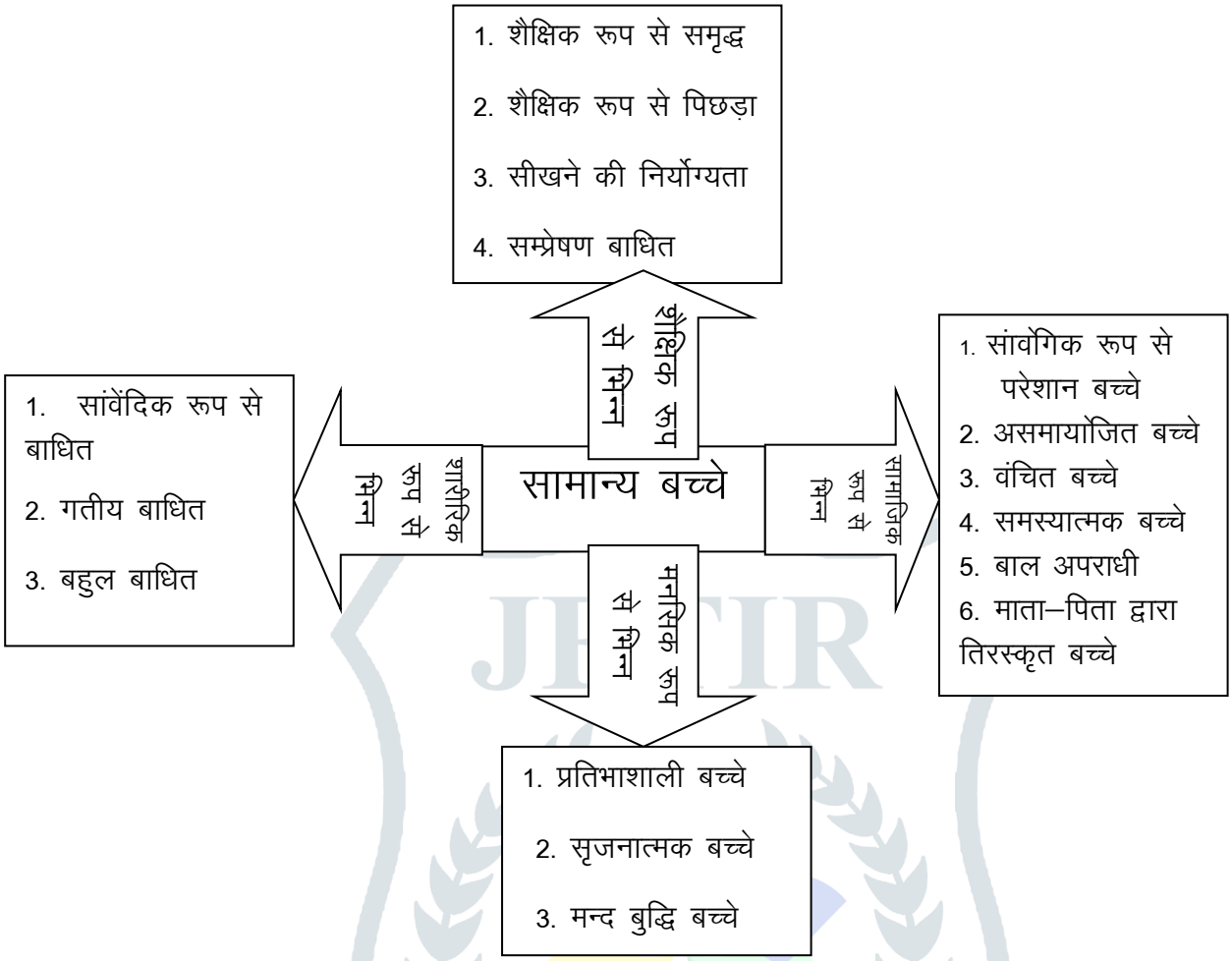

विकलांगताओं के कारण :–

बच्चों की अधिक समस्याओं का जन्म अनेक कारणों से होता है जिनमें कुछ कारण बच्चों के अन्दर निहित होते हैं, कुछ अन्य वातावरण से सम्बन्धित होते है। बच्चों की अधिगम समस्याओं से सम्बन्धित आन्तरिक कारण निम्नवत् हो सकते है।

1. बौद्धिक क्रियाकलाप का निम्नस्तर तथा विकास की मन्दगति।
2. दृष्टि विषयक समस्या (देखने में कठिनाई)।
3. श्रवण तथा वाक समस्या (सुनने तथा बोलने में कठिनाई)
4. हाथ–पैर का क्षतिग्रस्त होना या हाथ–पैर का न होना, अंगों की विकृति, मांसपेशियों के तालमेल में समस्या होने से क्रियाकलाप में कठिनाई।
5. मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं जैसे प्रत्यक्षीकरण, अवधान, स्मृति विषयक समस्याएँ।
6. दृष्टि तथा मांसपेशियों में तालमेल (टपेनंस डवजवत ब्व.वतकपदंजपवद) न होने से पढ़ने–लिखने, वर्ण विन्यास में कठिनाई। कुछ कारण बच्चों के घर–परिवार के वातावरण से सम्बन्धित होते है, जैसे – माता–पिता के स्नेह में कमी।

कुछ कारण बच्चों के घर–परिवार के वातावरण से सम्बन्धित होते है, जैसे –

1. परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा बच्चों को दूसरे बच्चों की भाँति समान स्तर पर स्वीकार न किया जाना अर्थात् बच्चों को हीनभावना से देखना।
2. सीखने के समान अवसर न मिलना तथा बातचीत करने के कम अवसर मिलना।
3. शिशु स्तर पर लालन–पालन के अनुपयुक्त तरीके अपनाना। विद्यालयीय वातावरण से सम्बन्धित कारण –

विद्यालयीय वातावरण से सम्बन्धित कारण

1. शिक्षक का बच्चे से कम लगाव होना।
2. सीखने की गति धीमी होने पर बच्चे के प्रति गलत धारणा बना लेना।
3. कक्षा में अनुकूल सामाजिक वातावरण न होना।
4. सामान्य बच्चों का विकलांग बच्चे के साथ प्रतिकूल व्यवहार करना।
5. उत्तरदायित्व निर्वहन तथा सुविधाओं की भागीदारी जैसी भावनाओं के प्रति उदासीनता होना।
6. बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं तथा भौतिक सुविधाओं के सामंजस्य का अभाव होना।

विशेष शैक्षिक प्रावधान :

विकलांग या अक्षमताग्रस्त बच्चों को शिक्षा के लिए कई प्रकार के शैक्षिक प्रावधान उपलब्ध कराये गये है जिनमें से कुछ इस प्रकार है :

1. समेकित शिक्षा विन्यास (क्षतिपूरक सहायक उपकरण) :– इस श्रेणी में ऐसे बच्चे आते है जिनकी अपंगता या अक्षमता बहुत ही कम अथवा सामान्य प्रकार की है। इनमें से अधिकतर बच्चे सामान्य विद्यालयों में पढ़ रहे होते है। उन्हें केवल कुछ ऐसे उपकरणों की आवश्यकता होती है जिससे वे अपने इन्द्रिय दोष या कमी को पूरा कर सकें, जैसे कुछ ऊँचा सुनने वाले बच्चों को श्रवण उपकरण देने से उसका काम चल जायेगा। कम दिखाई देने पर आवर्धक शीशे की सहायता से विद्यार्थी पढ़ सकता है।

2. **समेकित शिक्षा की व्यवस्था (पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन)** :– बच्चों की विशेष आवश्यकता के अनुसार विषय वस्तु को सामान्य अध्यापक विशेष अध्यापक के परामर्श से तैयार कर सकते है।

3. समेकित शिक्षा भवन (विशेष प्रकार के विद्यालय) :– गम्भीर रूप से विकलांग बच्चों को सामान्य विद्यालय के परिसर या निकटवर्ती विशेष प्रकार के विद्यालय में शिक्षा देने की व्यवस्था होनी चाहिए। आधारभूत अकादमी कौशलों के विकास के बाद इनमें से अधिकतर बच्चों को सामान्य विद्यालयों में पढ़ाया जा सकता है।

इसी प्रकार विशेष प्रकार की शिक्षा देने वाले आवासीय विद्यालय भी है जिनमें उन बच्चों को भेजा जाता है जिन्हें एकीकृत शिक्षा में नहीं पढ़ाया जा सकता है।

एकीकृत शिक्षा को सहज बनाने वाले कारक :

1. सामान्य विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चो की कम अपंगता की पहचान एकदम प्रारम्भ में करना उपयुक्त है।
2. गम्भीर विकलांगता होने पर प्रारम्भ में प्रशिक्षण तथा आवश्यक सुविधाएं सुलभ कराना जिससे यह ज्ञात हो सके कि किनको सामान्य कक्षाओं में बैठाया जा सकता है।
3. इन बच्चों को निरन्तर उपचारात्मक सेवायें उपलब्ध कराना साथ ही उपकरणों के उपयोग सुझाना।
4. बच्चों में रचनात्मक विश्वास जागृत करना तथा उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना।
5. विकलांग बच्चों के साथ सामान्य बच्चों जैसा व्यवहार किया जाना जिससे उनका सामान्य बच्चों की भांति विकास हो सके।
6. समेकित शिक्षा में पढ़ने वाले बच्चों के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित विषयवस्तु में परिवर्तन कर पहले से ही शिक्षक की रूपरेखा तैयार करना।
7. अमूर्त तथा कठिन अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त सहायक सामग्री तैयार करना। तीन आयामों वाले माडलों का उपयोग करना।
8. संसाधन (विशेष) अध्यापक की सहायता से अतिरिक्त शिक्षण सामग्री तैयार करना।
9. विकलांग बच्चों में से प्रत्येक की शैक्षिक विशेषताओं और उनकी आवश्यकताओं की स्पष्ट जानकारी रखना।

10. विद्यालय की प्रत्येक प्रकार की गतिविधि में प्रत्येक विद्यार्थी की भागीदारी सुनिश्चित करना जिससे बौद्धिक विकास के लिए सबको समान अवसर मिल सकें।

एकीकृत शिक्षा को सफल, प्रभावी तथा अर्थपूर्ण बनाने में सबसे महत्वपूर्ण कारक विकलांग बच्चों के साथ शिक्षक का स्नेहपूर्ण तथा सकारात्क व्यवहार है। इसके अतिरिक्त शिक्षण सम्बन्धी परिवर्तन या सुधार की अन्तर्दृष्टि भी अपेक्षित है जिससे इन बच्चों की आवश्यकतानुसार शिक्षण– अधिगम की व्यवस्था हो सके।

निष्कर्ष के रूप में समेकित शिक्षा का आशय इस प्रकार है :

1. समाज द्वारा अन्य सामान्य लोगों की भाँति इन अक्षमता ग्रस्त बच्चों को स्वीकृति दिलाना और उन्हें शिक्षा तथा रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराना।
2. सामान्य बच्चों तथा अक्षमता ग्रस्त बच्चों के बीच स्वस्थ सामाजिक सम्बन्ध विकसित करना जिससे इन बच्चों के प्रति भेदभाव मूलक दृष्टिकोण को बदलकर अनुकूल तथा सकारात्मक बनाया जा सकें।
3. जीवन तथा रहन–सहन के स्तर को उन्नत करने के लिए इन बच्चों के नागरिक अधिकारों के उपभोग हेतु आवश्यक सामर्थ्य का विकास सुनिश्चित करना।
4. उन्हें स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत करने हेतु तैयार करना।
5. इस प्रसंग में यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि एकीकरण ही अलगाव की समस्या का व्यावहारिक समाधान है क्योंकि इससे अक्षमताग्रस्त बच्चों को सामान्य बच्चों की भांति शिक्षा प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होती है। यह व्यवस्था व्यय साध्य नहीं है तथा इससे बच्चों की अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है।

अक्षमताग्रस्त बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की गलत धारणाएँ प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए बहुत से अध्यापकों का विश्वास है कि सभी प्रकार की अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष प्रकार की तकनीकों की आवश्यकता होती है किन्तु यह सत्य नहीं है। प्रतिदिन की कक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षकों को इन बच्चों को पढ़ाने के लिए किसी विशेष तकनीक की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि विशेष प्रकार की तकनीकों की आवश्यकता उन बच्चों के लिए होती है जिनका रोग असाध्य या गम्भीर रूप धारण कर चुका है। इन बच्चों में भी आधारभूत कौशल या दक्षता लाने तक ही इन तकनीकों की आवश्यकता होती है। साधारण रूप से विकलांग या अपंग बच्चों की शिक्षा में विशेष तकनीक की आवश्यकता नहीं पड़ती है। विशेष दक्षता प्राप्त करके तो असाधारण रूप से विकलांग बच्चों को भी नियमित रूप से चलने वाली कक्षा में पढ़ाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

भार्गव, महेश – विशिष्ट बच्चे
शर्मा, आर0ए0 – विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप
सिरिल, बर्ट – एक्सेप्सनल चिल्ड्रेनं